E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

वर्तमान युग में महात्मा गांधी के स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता

डॉ. सुरेश

असिसटेंट प्रोफेसर इतिहास,संस्कृति पुरातत्त्व विभाग

चौधरी रणवीर सिंह

विश्वविद्यालय, जीन्द

Paper Rcevied date

05/05/2025

Paper date Publishing Date

10/05/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15538560

IMPACT FACTOR

5.924

ABSTRACT

आज के समय में सम्पूर्ण विश्व में अशांति एवं मूल्यहीनता पननी हुई है। इस समय में महात्मा गांधी के विचारों का टिमटिमाना दोषक अनवरत प्रकाश दे रहा है । आज सनाज समृद्धि और गरीबी, स्वतन्त्रता और शोषण, सामाजिक सम्बन्ध के विरोधाभास में फंसा है। आवश्यकता इस बात की है कि हम महात्मा गांधी के उन्हीं मूल्यों और सिद्धान्तों की पुनरावृत्ति करें, जिससे मानवता और देश का विकास हो और एकता तथा शांति स्थापित हो । शिक्षा इसमें बहुत ही अहम भूमिका निभा सकती है।

महात्मा गांधी और विनोबा भावे जी के शिक्षा सम्बन्धी विचार समस्त विश्व के लिए उपयोगी है और इनका भूमण्डल को बचाने के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए । नैतिक मूल्यों को 1900-2000 शताब्दी तक चार अवस्थाओं में रखा जा सकता है । पहली अवस्था ने नैतिक नृत्य चरन सोना पर थे, दूसरी अवस्था में कुछ घंटे तीसरी अवस्था में और अधिक नीचे आए और चौथी अवस्था में अब ऐसा लगता है कि में पूर्णतया नष्ट हो रहे हैं। गांधी जी का शिक्षा मार्ग हो हमें इस विनाश से बचा सकता । जो शिक्षा नैतिक एवं भावनात्मक मूल्यों को उपेक्षा करती है यह एक नथुतसखों के उले के सतान है, जिसने जीवन जीते हुए भी सनीण जीवन का अभाव रहता है।

महात्मा गांधी जी कोई भविष्य वक्ता नहीं थे, परन्तु ऐसा लग रहा है कि शताब्दियों पूर्ण गांधी में जिन औद्योगिक एवं तकनीकी समाज से उत्पन्न समस्याओं को ओर सचेत किया था, वो आज वर्तमान है। (1) समकालीन भारतीय समाज में और भौतिकवादी एवं उपभोक्तावादी संस्कृति पनन गई हैं । मानव एक तरफ हिंसा और दूसरी तरफ अलगाव के श्रीच घटपटा रहा है । ऐसी विकट परिस्थितियों में गांधी जी ने मूल्यों को शिक्षा की स्थापना की। गांधी जी ने तानव को उसके नैतिक परिप्रेक्ष्य में देखने की चेष्टा की और इसी कारण तकनीकी युग से उत्पन्न जाती को ओर संकेत दिया । गांधी ने जिन मूल्यों को स्थापना की है, ये कोई तत्त्वमीमांसा पर आधारित नहीं है गांरिक अनुभूतियों को भरती पर बड़े हैं ॥ नानव स्वभाव, सामाजिक रिश्ते और संघर्षी से उतन विचारों के आधार पर गांधी जी ने अपने जीवन दर्शन का नाना जाना चुना है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है कि शिक्षा सामाजिक तनाव और सामाजिक समानता के लक्ष्य तक पहुंचने का प्रमुख साधन है । गांभी जो की दृष्टि से भी शिक्षा सामाजिक क्रांति और सामाजिक परिवर्तन का साथन थी । गांधी जी इस बात को जानते थे कि बिना शिक्षा कोई सामाजिक सुधार नहीं हो सकता। इसलिए दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने शिक्षा को व्यापक रूप में अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष का साधन बनामा और फिर भारत में शिक्षा को आजादी की लड़ाई का साधन बनाया । उसके बाद आर्थिक आजादी के लिए स्वतन्त्रता और स्वावलम्बन के लिए उन्होंने शिक्षा का माध्यम बनाया। गांधी जी कंवल कक्षा या आजन के शिक्षक नहीं थे, जिन्होंने एक मृत राष्ट्र को प्राण देकर उनका नानल बदल कर रख दिया । इसीलिए लुई फिशर कहा है कि गांधी एक राजनीतिक नेता नहीं थे कार्तिक बहुत कई शिक्षक भी थे । भारत का अपना इस समय न तो कोई जीवन दर्शन है और न ही शिक्षा दर्शन है। गांधी जी का शिक्षा दर्शन सर्वोदय के सिद्धान्त पर आधारित है और जब तक सर्वोदय दर्शन की आत्मा नहीं पहचानी जाती, तब तक गांधी शिक्षा दर्शन भी नहीं समझा जा सकता है । यह कितनी हास्यप्रद बात है कि कोठारी कमीशन ने यह तो स्वीकार किया कि गांधी के शिक्षा सिद्धान सभी स्तरों के लिए उपयोगी है, किन्तु उनके सिद्धान्तों के क्रियान्यय के लिए कोई सुनिशिचत योजना प्रस्तुत नहीं को । शिक्षा का व्यवसायीकरण सोखने के साथ-साथ फसाना - यह सिद्धान्त ऐसे अकबरे रूप में प्रस्तुत किया गया है कि उससे कोई लाभ नहीं हुआ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

चरित्र का निर्माण एक गढ़ते हुए वृक्ष के समान 12 यदि इसकी नई आरम्भ से ही दुर्बल हो गई तो लाख प्रपात करने पर भी वृक्ष स्वस्थ नहीं हो सकता। यही वात गन्ने के विकास में लागू है । आज बच्चों को एक ऐसी सेना तैयार हो रही हैं जो अपने कपड़े स्वयं नहीं पहन सकते, जो अपना होमवर्क स्वयं नहीं कर सकते वह आगासी जीवन में आत्मनिर्भर कैसे बनेंगे? शिक्षा केवल अर्थोपार्जन के लिए नहीं है केवल आर्थिक स्वावलम्वन के लिए नहीं है बल्कि सम्पूर्ण मानव विकास के लिए है ।

'सा विद्या या विमुक्तये" (2) शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐसा सिद्धान्त है। जिसके द्वारा अज्ञानता को दूर किया जा सकता है। इस अज्ञानता से गांधी जी का अर्थ था आत्मा को शुद्धता। इस पर ही बात कर मनुष्य मनुष्य कहलाने योग्य हो सकता है। उन्होंने शारीरिक अन को शिक्षा का अभिन्न अंग माना है । दूसरों से उन्होंने 'Brest labour' सिद्धान्त को ग्रहण किया और उसे भारतीय परिप्रेक्ष्य में मान्यता दिलाई। भारतीय हस्त कला की शिक्षा द्वारा गरीबी दूर की जा सकती है । इसलिए इस शिक्षा को उन्होंने काफी महत्त्व दिया है। चरित्र निर्माण और उन्न नैतिक मूल्यों के बिना हमारी शिक्षा अधुरी ही रहेंगी । उन्होंने भारत को गदती हुई आबादी को ध्यान में रखते हुए और उसी के अनुरूप ऐसी शिक्षा पद्धति को स्थापना करने को सोचा, जो समाज के लिए सुलभ हो सकें । उन्होंने अंग्रेजी भाषा के महत्व को नहीं समझा लेकिन शिक्षा का माध्यम मातृभाषा गनाया है। (3)

स्त्री-शिक्षा के महत्व को गांधी जी ने समझा । उनका कथन कि "पारिवारिक गाड़ी के सुतंचालन में स्त्री-पुरुष दोनों को शिक्षित होना आवश्यक है | एक पहिये के विपरीत स्थिति में रहने के कारण दाम्पत्परूनी गाड़ी का संचालन सुविधाजनक और शांतिपूर्ण ढंगले नहीं हो सकेगा। (4)

गांधी जी ने अपने शिक्षा सम्बन्धी लेखों तथा भाषणों में स्त्री-शिक्षा को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण गललामा है ।

शिक्षा सर्वप्रथम माता की गोद से ही शुरू होती हैं। आधुनिक मनोविज्ञानिकों का कहना है कि वालक अपनी माता के गर्भ काल में हो उन कलिषण संस्कारों को अपना लेता है, जो उसके भावी जीवन को वहुत प्रभावित करते हैं । इतिहास में अनेकों ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिसते सालून होता है कि संसार में कई महापुरुषों का निर्माण उनको साता द्वारा उनको बाल्यावस्था में दी गई शिक्षा के आधार पर ही हुआ है रामावस्या तथा वाल्यावस्था में वालक अपनी माता से अत्यधिक प्रभावित

होते हैं । अतः कालिकाओं को शिक्षा कितनी आवश्यक है इसे कोई भी विचारशील व्यक्ति सहन ही अनुभव कर सकता है। किसी विद्वान ने कहा है कि "एक पुरुष को शिक्षित करके एक व्यक्ति को ही शिक्षित किया जा सकता है, परन्तु एक वालिका को शिक्षित करने का तात्पर्य है। पूरे परिवार को शिक्षित बनाना ।" अतः आज भारत में स्त्री-शिक्षा को अत्यधिक आवश्यकता है ।

परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण में स्त्री-पुरुष का इतना महत्त्वपूर्ण स्थान होते हुए भी आधुनिक भारत को अधिकांश स्त्रियां अशिक्षित हैं । नानूलो नदन लिखने में भी वे सर्वथा अनभिज्ञ है । शहरों में वालिकाओं को पढ़ाने की कुछ व्यवस्था हुई है, परन्तु गांव की अवस्था अत्यन्त शोचनीय है । देशानों में तो बालिकाओं को विद्यालयों में नहीं भेजा जाता । (5)

स्त्री-शिक्षा के महत्व को गांधी जी ने फाफी समझा। उनका मन था कि सह शिक्षा की व्यवस्था की जा सकती है लेकिन कुछ विशेष परिस्थितियों में सामाजिक परिस्थितियों को देखते हुए वालिका विद्यालयों की स्थापना की जा सकती है । महात्मा गांधी जी शारीरिक दण्ड देने के विरोधी मे ।

1986 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति में ग्राम विश्वविद्यालय की स्थापना प्रस्तावित की गई है। पूरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के केवल इसी पैराग्राफ में गांधी और उनके क्रांतिकारी विचारों का स्मरण किया गया है । कदाचित या तो इसका साहस नहीं हुआ या तो विद्वान नीति निर्धारकों को समझ में नहीं आया कि बुनियादी शिक्षा का भी जिसे गांधी जी ने कहा था कि वह राष्ट्र को उनकी सबसे बड़ी भेंट है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति के चिंतन की विसंगति का परिणाम है । बुनियादी शिक्षा संस्था संकुचित नहीं है यह व्यापक सामाजिक क्रांति का संदेश है, एक विशाल आंदोलन है, जिसका उद्देश्य केवल देश को नहीं समस्त मानवता को अपनी परिधि में लेना है ।

गांधी जी को शिक्षा दर्शन के सार रूप में यदि कहा जाए तो यह शारीरिक अम पर आधारित सरल और सारे जीवन के निर्माण की प्रक्रिया है । राजनीति अर्थ और नैतिकता की दृष्टि से उसका आधार शोषण और प्रतियोगिता नहीं है। नैतिकता विहीन बाजार का अर्थशास्त्र नहीं है । गांधी जी को शिक्षा मन, वचन और आचरण का समन्वय है, उसमें व्यक्ति और तताज का सामंजस्य है, उसने आन्तरिक और वाम जगत का एकीकरण है, उसमें धर्म को सन्नी परिभाषा है । समाजोपयोगी

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

लाभ से रहित, उत्पाद के कार्य से हर व्यक्ति को लगाना हर व्यक्ति को उत्पादक और उपभोक्ता बनाना, यह गांधी के शिक्षा दर्शन का प्रमुख सूत्र है । (6)

स्मृतिकारों ने भी शिक्षा की महत्ता को स्वीकार करते हुए कहा कि शिक्षा (स्वाध्याय) से शरीर को ब्रहम की प्राप्ति के योग्य बनाता जाता | प्राप्त शिक्षा को आलस्यवश विस्तृत कर देना ब्रहम हत्या के सतान लाना गया है । शिक्षित व्यक्ति को अनादरणाची सम्बोधनों से पुकारने का निषेध रहा | व्यक्ति की ज्येष्ठता अष्ठता का प्रतीक उसके सफेद बाल या आयु नहीं, बल्कि उसकी विद्वता (शिक्षा) होती है। शिक्षा की महत्ता की लौकिक कारणों द्वारा भी बार-बार यह कहने का यत्न हुआ है कि शिक्षा कंगल विराट का परम अनुभव ही नहीं, लोक में भी उतनी उपास । इसके कारण जो साध्यम लोक-परलोक दोनों के निर्माण में इतना प्रभावी हो उसका सामाजिक संदर्भों में इतना महत्त्वपूर्ण होना स्वाभाविक है । (7)

महात्मा गांधी जी का मानना था कि शिक्षित स्त्री के बिना शिक्षित पुरुष हो हो नहीं सकता । यदि पुरुषों और स्त्रियों में से केवल किसी एक के लिए शिक्षा का प्रावधान करना है तो यह अगसर स्त्रियों को दिया जाने चाहिए, क्योंकि नग वह शिक्षा स्वर्यतंय अगली पीढ़ी को प्राप्त हो जाएगी । 1963 में वनस्थली विद्यापीठ में भाषण देते हुए नेहरू ने भी इसी तथ्य को दोहराया था कि लड़के को शिक्षा केवल एक व्यक्ति को शिक्षा है परन्तु एक लड़की की शिक्षा सम्पूर्ण परिवार को शिक्षा है इस कमन में भी अतिश्योक्ति नहीं है। वस्तुत: पर जैसा होता है जैसा उसे गृहिणी बनाती है । और जन्मे वैसे बनते है जैसा उन्हें मां बनाती है। बालक को शिक्षा गर्भ से ही शुरू हो जाती है । नां अपने विचारों के साध्यम से जो संस्कार वालक को प्रदान करती है, वालक वेसा ही बनता है ।

संस्कार मां के अतिरिक्त कोई अन्य प्रदान नहीं कर सकता । जन्म के बाद के प्रारम्भिक वर्षों से बालक की हर गतिविधि पर मां का हो नियन्त्रण होता है । सामान्यतः हर स्त्री को यह भूमिका निभानी हो अत: स्त्रियों का शिक्षा महत्त्वपूर्ण हैं । शपलय ब्राहमण में कहा गया कि माता, पिता और आचार्य - जव में आन शिक्षक होते हैं तभी मनुष्य ज्ञानवान होना । मनुस्मृति में कहा गया है कि उपाध्याय से दस गुणो अधिक महत्ता आचार्य को है, सौ आचायों के समान नहत्ता पिता

को है। और हजार पिताओं से बढ़कर महत्ता मां की है । (8) गृहिणी के रूप में भी नारी के उत्तरचामित्व महान । उसे अपने विशेष प्रयास से ऐसे मधुर पारिवारिक सम्बन्धों का निर्माण करना है जो ईंट-पत्थर के घर को प्रेस और आदर का अक्षम भण्डार बना देती है। ओ सैपदेन के शब्दों में कि ज्ञान अच्छा है, गौद्धिक सम्पन्नता भी अच्छी है और विवेक भी अधिक मूल्यवान गुण है, पर यदि में जीवन को रचना को पूर्ण नहीं बनाते, उससे संघटित नहीं हो जाते और किसी स्त्री को इस योग्य नहीं बनाते कि उसका जीवन कलाकृति वन जाए, तो उनका कोई महत्व नहीं ।

आजकल को सामाजिक व्यवस्था में वर्तमान महंगाई के इस युग में और व्यस्तता के इस युग में स्त्री शिक्षा का महत्त्व इस दृष्टि से और भी गढ़ गया है। सफल जनतन्त्र की स्थापना के लिए भी स्त्रियों का शिक्षित होना आवश्यक है । यं तताधिकार का स्वतन्त्रतापूर्वक और त्वविवेकानुसार प्रयोग कर सके, यह उनकी शिक्षा पर ही निर्भर करता है। वे समाज और देश के प्रति अपना कर्तव्य को समझ सके, इसके लिए उनका शिक्षित होना और भी आवश्यक, अपरिहार्य है । (9)

इस प्रकार महात्मा गांधी जी के अनुसार मनुष्यत्व बनाना ही शिक्षा का सर्वप्रथम लक्ष्य है न कि पशु बनाना । मनुष्य को इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए कि वह अपना शारीरिक, मानसिक, वौद्धिक व सामाजिक विकास कर सके । शिक्षा इस प्रकार को हो कि उसका ज्ञान निरन्तर वृद्धि करता रहे। ऐसा नहीं होना चाहिए कि आज भोजन किया और उसकी तृप्ति दो दिन बाद हो । तुप्ति और दृष्टि का अनुभव भी

उस सनम हो जाना चाहिए। शिक्षा के दौरान जिसने भी इस बार उस वास्तविक ज्ञान को प्राप्त कर लिया है तो वह ज्ञान उसे कभी भी भूलना नहीं चाहिए, उसे तभी शिक्षा को तृप्ति हो पाएगी, अन्यथा नहीं।

गांधी के अनुसार ज्ञानार्जन को पिपासा हमारे जीवन का सच्चा आनन्द होगी । आजाद देश के स्वस्थ जीवन को मह कसौटी है कि वहां के नागरिक कितना उत्सुक व नागलक है । अपनी शिक्षा योजना द्वारा हो हम अपने लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं तथा ज्ञानार्जन ने अपना जीवन न्यौछावर कर सकते हैं ।

गांधी जी ने ऐसी शिक्षा का समर्थन किया है जो छात्रों का चारित्रिक विकास करती है न कि केवल गौद्धिक विकास हो करती है । उनको दृष्टि में ऐसी निरर्थक जो छात्रों के अन्दर सद्गुणों का विकास नहीं कर पाती है । वे शिक्षा का लक्ष्य आध्यात्मिक विकास को हो लानते हैं जिससे छात्रों को आत्मज्ञान हो सके । वे अपने जीवन में सही-गलत का में ले सके ।

निष्कर्ष :

अतः कहा जा सकता है फि शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, सानानिक और राष्ट्रीय प्रगति तथा सभ्यता और संस्कृति के विकास के लिए अनिवार्य है । शिक्षा न केवल प्रचलित सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों को सुरक्षित रखती हैं अपितु नए मूल्यों का तुलन भी करती है । शिक्षा में सामाजिक परिवर्तन लाने की क्षमता होती है। शिक्षा गई स्तर पर सामाजिक परिवर्तन हेतु एक और एकमात्र अधिकरण है । सानानिक परिवर्तन के द्वारा समान का विकास होता है और समान का विकास उसमें निहित सम्पूर्ण नानवीय क्षमता के कुशलतापूर्वक उपयोग पर निर्भर करता है । अत: समाज के सभी नागरिकों के सहयोग के बिना पूर्ण विकास सम्भव नहीं हो सकता |

संदर्भ सूची

1. 1. पं. डी. गंगराद गांधी जी के शिखा सम्बन्धी क्रांतिकारी विचार गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली, 2000 .
2. फौजिया परवीन, गांधी दर्शन में नारी स्वतन्त्रता, विशालन प्रकाराम, सागर, प्रथम संस्कार-2009, 29
3. शिनन कुमार चौधरी, विवेकानन्द, अरविन्द एवं गांधी के शिक्षा दर्शन, एलिल वृषा प्रा. लि. नई दिल्ली प्रथम संस्करण-2013 - 403
4. डॉ. वैशन शर्मा, शिक्षा शास्त्र, विहार हिन्दी प्रेम अादमी, नदना 1975 3- 257
5. डॉ. वैद्यनाथ वर्मा, शिक्षा शास्त्र, विहार हिन्दी सादी पढना 1975, 3-258
6. .डी. गंद गांधी जी के शिक्षा सम्बन्धी क्रांतिकारी विचार गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली, 2000 पु. 51

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

7. डॉ. किरण सिंह, प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था, शिर्यात प्रणाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्मरण-2009, पृ. 31
8. रविन्द्र अग्निहोत्री, आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएं और समाधान, राजस्थान हिन्दी प्रेम अ◌ाम जनपुर सानो संस्करण-2013, पृ. 220
9. रविन्द्र अग्निहोगी, आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएं और समाधान, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जनपुर, सातवां संस्फारण-2013, पृ. 230